अछर खेल इछाए कर, छर रच के उड़ात।
वासना पांचों पोहोंचे इत, ए सत मंडल साख्यात।। ९९ ।।

अक्षर ब्रह्म अपनी इच्छा मात्र से खेल बनाते और मिटाते हैं। अक्षर की पांच वासनाओं को अक्षर ब्रह्म तक ही ज्ञान है। यह सदा अखण्ड हैं।

पांचो बुध ले वले पीछे, तामें बुध विसेक विचार।
अछर आंखां खोलसी, होसी हरख अपार।। १०० ।।

अक्षर की पांचों वासनाएं जब जागृत बुद्धि से अपने घर लौटेंगी तब वह विशेष विचार करेंगी और अक्षर ब्रह्म की फरामोशी हटेगी और तब बेशुमार आनन्द होगा।

लीला तीनों थिर होएसी, अखंड इन प्रकार।
निमख एक न विसरसी, रेहेसी दिल में सार।। १०१ ।।

ब्रज, रास और जागनी की तीनों लीलाएं अक्षर के मन, चित्त और बुद्धि में अखण्ड हो जाएंगी। हम रूहों के दिल में इनकी हकीकत अखण्ड हो जाएगी। एक पल के लिए भी भूलेंगी नहीं।

उत्तम भी कहूं इनमें, जहां तारतम को विस्तार।
वासना पांचों बुध ले, साख पूरसी संसार।। १०२ ।।

इन सब में जागनी की लीला उत्तम है। तारतम के ज्ञान से पहचान मिली और अक्षर ब्रह्म की पांचों वासनाएं भी इस ज्ञान से संसार को गवाही देंगी।

मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर।
तारतमें सब सुध परी, लीला अंदर की घर।। १०३ ।।

अक्षर की जागृत बुद्धि भी मेरी संगति से सुधर गई। जिसको अब तारतम ज्ञान से परमधाम के अन्दर की सारी हकीकत का ज्ञान हो गया।

मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी आकार।
बुध वासना जगावसी, तिन याद होसी संसार।। १०४ ।।

मेरे गुण, अंग, इन्द्रियों के अखण्ड आकार की पूजा सारी बहिश्तों वाले करेंगे। जागृत बुद्धि अक्षर की पांचों वासनाओं को जगाएगी तो उनको भी इस संसार की लीला याद रहेगी।

बुध तारतम लेयके, पसरसी वैराट के अंग।
अछर हिरदे या बिध, अधिक चढ़सी रंग।। १०५ ।।

जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान को लेकर सारे वैराट के जीवों के अन्दर बैठ जाएगी और तब अक्षर के हृदय में यह संसार अखण्ड हो जाएगा, जिससे अक्षर ब्रह्म को अधिक आनन्द होगा।

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ७२४ ॥

निज बुध भेली नूर में, अग्या मिने अंकूर।
दया सागर जोस का, किन रहे न पकरयो पूर।। १ ।।

जागृत बुद्धि का मिलन जब तारतम ज्ञान से हुआ और इन दोनों ने श्री इन्द्रावतीजी के अन्दर प्रवेश किया, तो श्री राजजी के हुक्म से श्री इन्द्रावतीजी का अंकुर जागा और श्री राजजी महाराज की मेहर और जोश के समुद्र में बड़े जोर का प्रवाह आया जिसको रोका नहीं जा सका।

Nijanand App

ए लीला है अति बड़ी, आई या इंड मांहें।
कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नांहें।। २ ।।

इस लीला का विस्तार बहुत बड़ा है जो इस ब्रह्माण्ड में हुई। कई ब्रह्माण्ड हो गए और कई होंगे, पर यह लीला न किसी ब्रह्माण्ड में हुई है और न ही फिर होगी।

ए अगम अकथ अलख, सो जाहेर करें हम।
पर नेक नेक प्रकासहीं, जिन सेहे न सको तुम।। ३ ।।

यह लीला अगम है, जहां कोई जा नहीं सकता। अकथनीय है, जिसका कोई वर्णन नहीं कर सकता। अलख है, जिसे कोई देख नहीं सकता। उसे हम अब जाहिर कर रहे हैं, परन्तु हम थोड़ी-थोड़ी ही जानकारी देंगे, नहीं तो तुम सहन नहीं कर पाओगे।

जो कबूं कानो ना सुनी, सो सुनते जीव उरझाए।
ताथें डरती मैं कहूं, जानूं जिन कोई गोते खाए।। ४ ।।

जिस लीला को किसी ने कभी सुना नहीं, वह जीव अब सुनते ही उलझन में पड़ जाएगा, इसलिए मैं संभल-संभलकर कहती हूं जिससे कोई दुविधा में न पड़ जाए (संशय में न पड़ जाए)।

नातो सब जाहेर करूं, नाहीं तुम सों अंतर।
खेंच खेंच तो केहेती हूं, सो तुमारी खातिर।। ५ ।।

नहीं तो मैं पूर्ण रूप से जाहिर कर दूं, क्योंकि तुम्हारे से कोई अन्तर (छिपाव) नहीं है, इसलिए खींच-खींच कर सावधान करके तुम्हारे वास्ते ही कहती हूं।

तुम दुख पाया मुझे सालहीं, अब सुख सब तुम हस्तक।
दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक।। ६ ।।

इस माया में जो तुमने दुःख देखा वह मुझे खटक रहा है। अब सम्पूर्ण अखण्ड परमधाम के सुख मैं तुम्हारे हाथ में देती हूं, क्योंकि सारी चौदह लोकों की दुनियां के जीवों को तुम्हारे हाथ से ही अखण्ड मुक्ति मिलनी है।

अजूं केहेती सकुचों, पर बोहोत बड़ी है बात।
सोभा पाई तुम याथें बड़ी, जो पिया वतन साख्यात।। ७ ।।

अभी भी मैं कहने में संकोच करती हूं, क्योंकि यह बहुत बड़ी बात है। तुमने इससे भी अधिक अपने धनी और वतन को देखकर शोभा पाई है।

इंड अखंड भी जाहेर, किए जागनी जोत।
अब सुन्य फोड़ आगे चली, जहां थें इंड पैदा होत।। ८ ।।

दो ब्रह्माण्ड जो अखण्ड किए हैं, उसके भी सुख तुमको जागृत करके दिए। अब निराकार को फोड़कर जहां से यह कालमाया के ब्रह्माण्ड पैदा होते हैं, उसकी जानकारी देती हूं।

सोभा इन मंडल की, क्यों कर कहूं वचन।
सो बुध नूर जाहेर करी, जो कबूं सुनी न कही किन।। ९ ।।

इस योगमाया के अखण्ड ब्रह्माण्ड की शोभा का वर्णन किस तरह से यहां के शब्दों से करूं? जिसको आज दिन तक कभी किसी ने न कहा था, न सुना था, उसे अब जागृत बुद्धि और तारतम की वाणी से जाहिर कर दिया है।

Nijanand App

रास बरनन भी ना हुआ, तो अछर बरनन क्यों होए।
कही न जाए हद में, पर तो भी कहूं नेक सोए।। १० ।।

अखण्ड रास जो योगमाया में है, का भी वर्णन नहीं हो सका तो अक्षर ब्रह्म का वर्णन कैसे होगा, क्योंकि यह निराकार हद के शब्द हैं। फिर भी मैं थोड़ा-सा कहती हूं।

जोगमाया तो माया कही, पर नेक न माया इत।
ख्वाबी दम सत होवहीं, सो अछर की बरकत।। ११ ।।

योगमाया तो फिर भी माया है, पर अक्षर धाम में तो माया का नामोनिशान भी नहीं है। अक्षर ब्रह्म की कृपा से यह दुनियां के झूठे जीव अखण्ड हो जाएंगे।

ताथें कालमाया जोगमाया, दोऊ पल में कई उपजत।
नास करे कई पल में, या चित्त थिर थापत।। १२ ।।

अक्षर ब्रह्म कालमाया तथा योगमाया के ऐसे कई ब्रह्माण्डों को एक पल में पैदा कर सकते हैं और मिटा सकते हैं। अपने चित्त में लेकर किन्हीं को अखण्ड भी कर सकते हैं।

तहां एक पलक न होवहीं, इत कई कल्प वितीत।
कई इंड उपजे होए फना, ऐसे पल में इन रीत।। १३ ।।

वहां एक पल भी व्यतीत नहीं होता और यहां कई कल्पान्त बीत जाते हैं। वहां के एक पल में कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं, ऐसी वहां की शक्ति है।

जागते ब्रह्मांड उपजे, पाव पल में अनेक।
सो देखे सब इत थें, बिध बिध के विवेक।। १४ ।।

एक पल के चौथाई हिस्से में वहां जागृत अवस्था में कई ब्रह्माण्ड बन जाते हैं। वह सभी यहां बैठे-बैठे ही हमने देख लिए।

ए लीला है अति बड़ी, दृष्टें उपजे ब्रह्मांड।
ए खेल खेले नित नए, याकी इछा है अखंड।। १५ ।।

यह लीला बहुत भारी है जो एक पल में अनेक ब्रह्माण्ड बनाती और मिटाती है। अक्षर ब्रह्म की इच्छा शक्ति अखण्ड है जो नित्य ही नए-नए ब्रह्माण्ड बनाती है।

ए मंडल है सदा, जाए कहिए अछर।
जाहेर इत थें देखिए, मिने बाहेर थें अंतर।। १६ ।।

यह मण्डल सदा अखण्ड है जिसे अक्षर धाम कहते हैं। यह यहां बैठे-बैठे ही अन्दर और बाहर से जागृत बुद्धि और तारतम के ज्ञान से देखने को मिलता है।

उतपन देखी इंड की, न अंतर रत्ती रेख।
सत वासना असत जीव, सब विध कही विवेक।। १७ ।।

हमने इस बार ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति को देखा है, परन्तु अक्षर धाम एक रत्ती मात्र भी कुछ नहीं बदलता। ब्रह्म वासना (आत्मा) सदा ही अखण्ड है तथा जीव हमेशा ही नाशवान है। इसकी हकीकत तरह-तरह से बताई है।

Nijanand App

मोह उपज्यो इतथें, जो सुन्य निराकार।
पल मीच ब्रह्मांड किया, कारज कारन सार।। १८ ।।

अक्षर के हुक्म से ही मोहतत्व शून्य निराकार की उत्पत्ति हुई है। अक्षर (सत सरूप) ब्रह्म के पलक झपकते ही ब्रह्म सृष्टी की इश्क रब्द के कारण, झूठी माया के खेल में उतारा गया।

मोह अग्यान भरमना, करम काल और सुंन।
ए नाम सारे नींद के, निराकार निरगुन।। १९ ।।

मोह तत्व, अज्ञान, भ्रम, कर्म, काल, शून्य, निराकार, निर्गुण यह सब नींद के अर्थात् माया के नाम हैं।

मन पोहोंचे इतलो, बुध तुरिया वचन।
उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहे सुंन।। २० ।।

यहां तक ही संसार के जीवों के मन, चित्त, बुद्धि और वचन पहुंचते हैं। आगे अटकल से ब्यान करके फिर निराकार में ही समा जाते हैं।

जो जीव होसी सुपन के, सो क्यों उलंघे सुंन।
वासना सुन्य उलंघ के, जाए पोहोंचे अछर वतन।। २१ ।।

जो जीव सपने में पैदा हुए हैं, वह शून्य को पार नहीं कर सकते। परमधाम की आत्माएं शून्य मण्डल को पार करके अपने अखण्ड घर पहुंचती हैं, जहां अक्षर ब्रह्म का भी धाम है।

ए सबे तुम समझियो, वासना जीव विगत।
झूठा जीव नींद न उलंघे, नींद उलंघे वासना सत।। २२ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आत्मा और जीव में यह ही अन्तर है। यह तुम समझना कि झूठा जीव निराकार से पार नहीं जा सकता। निराकार के पार आत्माएं ही जा सकती हैं।

सुपने नगरी देखिए, तिन सब में एक रस।
आपै होवे सब में, पांचो तत्व दसो दिस।। २३ ।।

इस सपने की नगरी में सब एक समान दिखाई देते हैं। इन सब तनों में पांच तत्व दसों दिशाओं में एक समान व्यापक हैं।

तिनमें भी दोए भांत है, एक वासना दूजे जीव।
संसा न राखूं किनका, मैं सब जाहेर कीव।। २४ ।।

इस पांच तत्व के तन भी दो प्रकार के है। इनमें एक आत्मा है दूसरा जीव है। इसे मैं सब जाहिर कर देती हूं ताकि किसी का संशय न रह जाए।

देखो सुपनमें कई लड़ मरें, सबे आपे पर ना दुखात।
जब देखें मारते आपको, तब उठे अंग धुजात।। २५ ।।

स्वप्न में आपस में कई लड़ते-मरते हैं, परन्तु अपने या दूसरे किसी को दुःख नहीं होता। अब देखो जब वही सपने में हमें मारने आते हैं तो हम चौंककर उठ बैठते हैं, क्योंकि हमारा मूल तन सपना देख रहा होता है जो चौंककर उठता है। वह तो सपने में ही है जो लड़ते-मरते हैं उनका कोई तन नहीं होता।

Nijanand App

वासना उतपन अंग थें, जीव नींद की उतपत।
कोई ना छोड़े घर अपना, या बिध सत असत।। २६ ।।

आत्माओं की उत्पत्ति उनके परात्म से है और जीव की उत्पत्ति शून्य (सपने) से है, इसलिए अपने-अपने घर को सच्ची आत्माएं और झूठे जीव कोई भी नहीं छोड़ता।

ब्रह्मांड चौदे तबक, सब सत का सुपन।
इन दृष्टांतें समझियो, विचारो वासना मन।। २७ ।।

यह चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड अक्षर के मन स्वरूप अव्याकृत का सपना है। इस दृष्टान्त से ही आत्मा और जीव के अन्तर का विचार कर लेना।

सुपन सत सरूप को, तुम कहोगे क्यों कर होए।
ए बिध सब जाहेर करूं, ज्यों रहे न धोखा कोए।। २८ ।।

तुम यह कहोगे कि अक्षर ब्रह्म तो सत हैं तो इन्हें सपना कैसे होता है? इसकी हकीकत भी जाहिर कर देती हूं, ताकि कोई संशय बाकी न रह जाए।

एक तीर खेंच के छोड़िए, तिन बेधाए कई पात।
सो पात सब एक चोटें, पाव पल में बेधात।। २९ ।।

एक तीर खींचकर छोड़ने में अनगिनत पत्रों में छेद हो जाते हैं। तो वह सभी पत्ते जैसे एक पल के चौथाई भाग में ही छिद जाते हैं।

पर पेहेले पात एक बेध के, तो दूजा बेधाए।
यामें सुपन कई उपजें, बेर एती भी कही न जाए।। ३० ।।

उसमें भी एक पत्ते से दूसरे पत्ते में तीर को जाने में जितनी देर लगती है उतने समय से भी कम समय में यहां कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं।

तो बेर एक की कहा कहूं, इत हुआ कहां सुपन।
पर सत ठौर का असत में, दृष्टांत नहीं कोई अन।। ३१ ।।

जब इतने समय में कई ब्रह्माण्ड बन जाते हैं तो एक ब्रह्माण्ड के बनने में कितना समय लगा, क्या कहूं अर्थात् समय तो लगा ही नहीं, तो स्वप्न हुआ कैसे कहा जाए? परन्तु अखण्ड धाम का झूठे संसार में और कोई दृष्टान्त ही नहीं है।

इत भेले रूह नूर बुध, और अग्या दया प्रकास।
पूरों आस अछर की, मेरा सुख देखाए साख्यात।। ३२ ।।

इस ब्रह्माण्ड में मेरी आत्मा में तारतम नूर, जागृत बुद्धि तथा धनी का हुक्म और मेहर इकट्ठे हैं। मैं ऐसे अखण्ड सुखों को साक्षात् दिखा करके अक्षर की इच्छा पूर्ण करूंगी।

इत भी उजाला अखंड, पर किरना न इत पकराए।
ए नूर सब एक होए चल्या, आगूं अछरातीत समाए।। ३३ ।।

यहां भी इस अखण्ड का ज्ञान है। पर उस ज्ञान की किरणों को संसार के जीवों में पकड़ने की शक्ति नहीं है। यह सम्पूर्ण ज्ञान और शक्तियां इकट्ठी होकर अक्षरातीत में समा जाएंगी।

Nijanand App

ए नूर आगे थें आइया, अछर ठौर के पार।
ए सब जाहेर कर चल्या, आया निज दरबार।। ३४ ।।

यह ज्ञान अक्षर-धाम से परे अक्षरातीत के धाम से आया है। जिसने अपने मूल घर परमधाम से आकर घर की सारी हकीकत जाहिर की।

वतन देखाया इत थें, सो केते कहूं प्रकार।
नूर अखंड ऐसा हुआ, जाको वार न काहूं पार।। ३५ ।।

यहां पर बैठे-बैठे ही इसने हमको परमधाम के कई प्रकार के सुखों को दिखाया और इसका ऐसा अखण्ड उजाला हुआ जिसका शुमार नहीं है।

किए विलास अंकूर थें, घर के अनेक प्रकार।
पिया सुंदरबाई अंग में, आए कियो विस्तार।। ३६ ।।

यहां आकर अनेक तरह से पिया ने सुन्दरबाई (श्यामाजी) के तन में बैठकर विस्तार से परात्म के विलास की लीला दिखाई।

ए बीज वचन दो एक, पिया बोए कियो प्रकास।
अंकूर ऐसा उठिया, सब किए हांस विलास।। ३७ ।।

धनी ने तारतम रूपी दो-एक वचन कहकर जो यहां अखण्ड वतन का बीज बोया, उससे इतना बड़ा अकुंर फूटा कि हमें यहीं बैठे-बैठे ही धनी के हांस-विलास का आनन्द मिला।

सूर ससि कई कोट कहूं, नूर तेज जोत प्रकास।
ए सब्द सारे मोहलों, और मोह को तो है नास।। ३८ ।।

यहां के करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा की ज्योति भी कहूं तो वह निराकार तक ही है और निराकार का तो नाश होने वाला है।

अब इन जुबां मैं क्यों कहूं, निज वतन विस्तार।
सब्द ना कोई पोहोंचहीं, मोह मिने हुआ आकार।। ३९ ।।

अब यहां की जबान से मैं अपने मूल घर अखण्ड परमधाम का विस्तार कैसे कहूं? क्योंकि यहां के शब्द और तन मोह तत्व के हैं जो अखण्ड तक नहीं पहुंचते।

मोह सो जो ना कछू, इनसे असंग बेहद।
सत को असत ना पोहोंचहीं, या बिध ना लगे सब्द।। ४० ।।

मोहतत्व तो कुछ भी नहीं है। इनसे योगमाया का ब्रह्माण्ड बेहद भूमि अलग है। सत का वर्णन करने के लिए असत के शब्द नहीं लगते।

बेहद को सब्द न पोहोंचहीं, तो क्यों पोहोंचे दरबार।
लुगा न पोहोंच्या रास लों, इन पार के भी पार।। ४१ ।।

जब यहां के झूठे शब्द बेहद का ही वर्णन नहीं कर सकते हैं, अखण्ड परमधाम जो बेहद के भी पार के भी पार है, का कैसे वर्णन करेंगे? यहां के शब्द तो अखण्ड रास का रंच मात्र भी वर्णन नहीं कर सके, तो उसके पार अक्षर और अक्षर के पार अक्षरातीत का वर्णन कैसे सम्भव हो सकता है?

Nijanand App

कोट हिस्से एक लुगे के, हिसाब किया मिहीं कर।
एक हिस्सा न पोहोंच्या रास लों, ए मैं देख्या फेर फेर।। ४२ ।।

इस नश्वर जगत का एक शब्द भी अखण्ड रास के करोड़वें हिस्से के वर्णन करने में नहीं लग सकता। यह मैंने बार-बार विचार किया और देखा है।

मैं अंगे रंगे अंगना संगे, करूं आप अपनी बात।
अब बोलते सरमाऊं, ताथें कही न जाए निध साख्यात।। ४३ ।।

अब मैं अपने परमधाम के सुन्दरसाथ के साथ मिलकर अपने घर की बातें करूंगी। इसे बोलने में शर्म भी आती है, इसलिए बोलने में साफ नहीं कहा जाता (क्योंकि यहां सत् की उपमा देने का कोई साधन ही नहीं है)।

वतन बातें केहेवे को, मैं देखती नहीं कोई काहूं।
देखां तो जो होए दूसरा, नहीं गांऊं नांऊं न ठांऊं।। ४४ ।।

अपने घर की बातें कहने के लिए मैं यहां किसी दूसरे को नहीं देखती हूं। हमारे बिना कोई और है ही नहीं जिसे गांव, नाम और ठिकाने का पता हो (क्योंकि यह सब सपने के जीव हैं)।

जहां नहीं तहां है कहे, ए दोऊ मोह के वचन।
ताथें विस्तार अंदर, बाहेर होत हूं मुंन।। ४५ ।।

निराकार के अन्दर जहां कुछ भी नहीं है, वहां यह सत् का वर्णन करते हैं। इन जीवों के सत् और झूठ दोनों ही निराकार के अन्दर के हैं, इसलिए मुझे अन्दर और बाहर का सब ज्ञान होने पर भी चुप रहना पड़ता है।

एता भी मैं तो कह्या, जो साथ को भरम का घैन।
वचन दो एक केहेके, टालूं सो दुतिया चैन।। ४६ ।।

सुन्दरसाथ को चूंकि संशय का नशा है, इसलिए मैंने थोड़ा ही वर्णन किया। अब दो एक सत्य के वचन कहकर सुन्दरसाथ के अन्दर की दुविधा की स्थिति हटा देती हूं।

साथ के सुख कारने, इंद्रावती को मैं कह्या।
ताथें मुख इंद्रावती के, कलस सबन का भया।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि सुन्दरसाथ को सुख देने के लिए ही यह ज्ञान मैंने **श्री इन्द्रावतीजी** को दिया है और इसीलिए श्री इन्द्रावतीजी के मुखारबिन्द से यह सर्वश्रेष्ठ ज्ञान जाहिर हुआ है।

|| प्रकरण || २४ || चौपाई || ७७१ ||

प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन || प्रकरण || १७२ || चौपाई || ४६६९ ||

|| कलस हिन्दुस्तानी-तौरेत सम्पूर्ण ||

Nijanand App